शब्द–ब्रह्म
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
E ISSN 2320 – 0871
17 सितम्बर 2018
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

शब्द ब्रह्म की प्राप्ति के उपाय

डॉ. जयकृष्ण
अतिथि अध्यापक
राष्ट्रीय संस्कृत संस्थान, वेदव्यास परिसर
बलाहर, कांगडा, हिमाचलप्रदेश, भारत

शोध संक्षेप

व्याकरण शास्त्र का दार्शनिक पक्ष समग्र विश्व के संस्कृत-विद्वानों ने एकमत से स्वीकार किया है। व्याकरण का दार्शनिकत्व शब्द ब्रह्म के चिन्तन के बिना संभव नहीं होता। शब्दशक्ति जो उस ब्रह्म अर्थात् ईश्वर की ही पर्याय है, जिसकी पहचान क्रियात्मक रूप से यदि कोई व्याकरण का अध्येता करे तो निश्चित रूप से समाज में सांस्कृतिक मूल्यों की क्रान्ति लाई जा सकती है। यद्यपि शब्द के अध्ययन के उपरान्त शब्द तत्व आत्मसात हो जाता है, परन्तु व्यावहारिक दृष्टि से सामान्य अध्येतागण इस अध्यात्म की विधा को सरल रूप से अनायास ही कैसे अपनाएं इसके विषय में कुछ एक उपायों की चर्चा की आवश्यकता है। अतः शब्द ब्रह्म की प्राप्ति के लोकसिद्ध कौन-कौन से उपाय हो सकते हैं, जिनसे शब्द तत्व का वास्तविक बोध हो पाए, इस चिन्तन के आधार पर ही 'शब्द ब्रह्म की प्राप्ति के उपाय' इस विषय को यहां चयनित किया गया है। इस विषय से सम्बन्धित शोध प्रक्रिया में व्याकरण के दार्शनिक विद्वानों का तथा प्रधान रूप से योगदर्शन का आलम्बन लिया गया है। समग्र व्याकरण दर्शन के अध्ययन के उपारन्त भी पाठक के अन्तःकरण में शब्दब्रह्म के वास्तविक स्वरूप को जानने की जो लालसा रहती है वह इस शोधलेख में दिए गए उपायों के परिपालन से निश्चित रूप से पूर्ण हो पाएगी ऐसा शोधार्थी का प्रयास है।

मुख्य शब्द : *शब्द ब्रह्म, अभेद, निदिध्यासन, वेद, परावाक, पश्यन्ती, प्रणव, मोक्ष।*

प्रस्तावना

समग्र जगत के वाचिक व्यवहार का साधन शब्द है। भाषा भी शब्दों के संयोग से ही अस्तित्व में आती है। भारतीय वाङ्मय के संस्कृत क्षेत्र के व्याकरण में तो शब्द को ब्रह्म का ही दर्जा दिया गया है। शब्द का यह ब्रह्मत्व व्याकरण को दर्शन का आवरण पहना देता है। इस शब्द ब्रह्म को शास्त्र क्रम से व्याख्यायित करना कदाचित सरल हो, परन्तु इसे वास्तविक रूप से आत्मसात करना एक साधना का विषय है। परन्तु यदि कोई साधक विभिन्न शास्त्रोक्त उपायों का आश्रय ग्रहण करे तो निश्चित रूप से शब्द ब्रह्म की प्राप्ति करके मोक्षमार्ग पर चला जा सकता है जो कि प्रत्येक आस्तिक व्यक्ति का गन्तव्य मार्ग है।

शोध प्रकृति - प्रकृत शोध पत्र विश्लेषणात्मक है। लेखक के अनेक वर्षों के अध्यापन के उपरान्त अध्येताओं की शब्द ब्रह्म की प्राप्ति सम्बन्धी जिज्ञासाओं के अनुरूप समाधान का प्रयास किया गया है।

शोध का उद्देश्य - प्रत्येक व्याकरण का अध्येता व अन्य शास्त्र का अध्येता शब्द ब्रह्म को आत्मसात करके योगमय-सा जीवन जीता हुआ सामान्यजन को भी शब्दतत्व से अवगत कराए यह प्रकृत शोध का उद्देश्य है।

शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका 17 सितम्बर 2018
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

शोध पत्र की उपयोगिता - इस शोध में शब्द ब्रह्म की प्राप्ति के सुगम उपाय को अपनाकर व्याकरण की दार्शनिक विधा को साधक सहज हृदयंगम कर पाएंगे।

शोध पत्र के लेखक ने प्रस्तुत शोध पत्र में प्रतिपादित शब्द ब्रह्म की प्राप्ति के एक उपाय योग का आलम्बन लेकर स्वयं व अनेक छात्रों के अन्तःकरण में शब्द ब्रह्म तत्व को परिचायित करने के प्रयास अनेक बार किए हैं, जिससे बहुत से सकारात्मक परिमाणों की अनुभूति हुई है।

शब्द ब्रह्म की प्राप्ति के उपाय

असाधु शब्दों से साधु शब्दों को अलग करके अनन्तकाल तक उन शब्दों को सुरक्षित रूप से रखना व उनके शुद्ध स्वरूप में विकृति न आने देना यह व्याकरण शास्त्र का लक्ष्य है। साधु शब्द के ज्ञान से न केवल अर्थ की स्पष्टता होती है अपितु वाङ्मय के सभी विषयों की स्पष्टता होकर भ्रान्तियों का निवारण भी हो जाता है। संस्कृत भाषा का पाणिनीय व्याकरण अतीव वैज्ञानिक रीति से आज तक संस्कृत भाषा के स्वरूप को स्थिर बनाए हुए है। इसी के साथ-साथ वेदादि शास्त्रों को समझने के लिए पाणिनीय व्याकरण अत्यन्त उपकारक है। अतः कहा जाता है कि -

काणादं पाणिनीयञ्च सर्वशास्त्रोपकारकम्।

इस संसार के समग्र व्यवहार के लिए कारणीभूत शब्द ही होता है। शब्द-तत्व इस जगत में यदि न हो तो संसार का हरेक प्रकार का व्यवहार प्रकाश से रहित व अन्धकार से युक्त सा हो जाए। शब्द की इस महत्ता को समझते हुए ही आचार्य दण्डी कहते हैं कि -

इदमन्धंतमः कृत्स्नं जायेत भुवनत्रयम्।
यदि शब्दाह्वयं ज्योतिरासंसारं न दीप्यते[1]॥

यह शब्द तत्व आदि और अन्त से रहित है। नामरूपात्मक यह दृश्यमाण व अदृश्यमाण समग्र संसार शब्द का ही आश्रय लेकर स्थित है। शब्द तत्व के इस महत्व को प्रकट करते हुए भर्तृहरि कहते हैं -

अनादिनिधनं ब्रह्म शब्दतत्त्वं यदक्षरम्।
विवर्ततेऽर्थभावेन प्रक्रिया जगतो यतः[2]॥

जिस प्रकार से देखा जाता है कि प्रत्येक शास्त्र अपने सिद्धान्तों के अनुरूप एक सार्वभौमिक दार्शनिक चिन्तन का प्रतिपादन करते हुए अपनी विशेषता को प्रतिपादित करता है, ठीक उसी प्रकार शब्द के इस व्याकरण शास्त्र का दार्शनिक पक्ष अनेक विद्वानों के द्वारा प्रतिपादित किया गया है। परन्तु शब्द ब्रह्म के विचार के बिना व्याकरण शास्त्र का दार्शनिक पक्ष प्रतिपादित नहीं किया जा सकता। भारतीय आस्तिक परम्परा में जो विषय प्रत्यक्षादि प्रमाणों से सिद्ध होता हुआ मोक्ष की प्राप्ति से सम्बन्ध रखता हो वह सामान्यतया दर्शन की कोटि में आ जाता है। भर्तृहरि आदि आचार्यों ने भी शब्द तत्व का ब्रह्म के साथ अभेद स्थापित कर व्याकरण को दार्शनिक दृष्टि से प्रस्तुत किया है। इस शब्द की प्राप्ति के द्वारा मोक्ष की प्राप्ति का प्रतिपादन भर्तृहरि के वाक्यपदीय नामक ग्रन्थ के ब्रह्म काण्ड में विस्तृत रूप से किया गया है। शब्द ब्रह्म की प्राप्ति, इसकी प्रतीति उपासना के बिना संभव नहीं है। आधुनिक व्याकरण के अध्ययन और अध्यापन के इस युग में व्याकरण के अध्येता व पढ़ाने वाले शब्द ब्रह्म की प्राप्ति में कितने अग्रसर हैं यह तो एक मूल्यांकनपरक शोध का विषय हो सकता है। व्याकरण का अध्ययन तभी चरितार्थ हो सकता है, जब शब्दाख्य ब्रह्म की प्राप्ति के द्वारा मोक्ष का मार्ग प्रशस्त किया जाए। अतः इस मोक्ष की

प्राप्ति के लिए पहले शब्द ब्रह्म की प्राप्ति नितान्त आवश्यक है। शब्द ब्रह्म की प्राप्ति यदि सिद्ध है तो भारतीयों का मोक्षाख्य परम लक्ष्य भी स्वतः सिद्ध हो जाता है। शब्दतत्व की पहचान के लिए शास्त्रों में अनेक उपाय वर्णित हैं। भर्तृहरि जी ने स्वयं उन उपायों का निर्देश वाक्यपदीय में किया है। हम यहां पर शब्द ब्रह्म की प्राप्ति के लिए शास्त्रोक्त अनेक प्रमाणों व युक्तियों के साथ विभिन्न उपायों की चर्चा करेंगे जिसके माध्यम से निश्चित रूप से कोई साधक शब्द के वास्तविक स्वरूप को समझने में सक्षम हो जाता है। अब यदि किसी साधक के द्वारा शब्द ब्रह्म का परिचय प्राप्त करना हो तो उस शब्द तत्व की अवधारणा अपने चित्त पटल पर करनी अतीव आवश्यक होती है। यह अवधारणा शब्द के नित्यत्व तथा उसके सर्वव्यापकत्व के बिना सम्भव नहीं है। और यदि शब्द के नित्यत्व व सर्वव्यापकत्व को समझना हो तो शब्द का ईश्वर के साथ अभेद बिठाना अतीव आवश्यक है।

शब्द और ईश्वर में अभेद

प्राचीन व नव्य वैयाकरणों के मत में शब्द नित्य है। अर्थात् शब्द कदापि नाश को प्राप्त होने वाली वस्तु नहीं है। यह शब्द ही सकल जगत का उपादान कारण है। परन्तु नैयायिकों के मत में तो यह समवायि कारण है। यह शब्द ही प्रपंच (जगत) के रूप में विवर्तवाद को प्राप्त हो रखा है अर्थात् यह जगत शब्द के रूप में ही अवभासित है। वेदान्तियों के मत में ब्रह्म का का जो लक्षण और स्वरूप कहा गया है वही लक्षण व स्वरूप शाब्दिकों (वैयाकरणों) के मत में शब्द के विषय में जानना चाहिए। इस प्रकार शब्द ही ब्रह्म है। अतः शब्द और ब्रह्म का परस्पर अभेद प्रतिपादित होता है। इस विषय में भर्तृहरि जी का उपर्युक्त ब्रह्मकाण्ड प्रमाण है।

अब यहां पर शंका होती है कि किस प्रकार का शब्द ब्रह्म होता है ? नैयायिकों के यहां ध्वनिरूप अथवा वर्णरूप जो शब्द है उसके बारे में तो अनित्यत्व ही माना गया है। क्योंकि किसी वर्ण के उच्चारण के उपरान्त उसका विलय देखने में आता है। अतः ऐसे अनित्य प्रतीत होने वाले शब्द की ब्रह्म के रूप में कल्पना किया जाना एक दर्शनसम्मत विषय नहीं हो सकता। इसी तरह ढोल, मृदङ्ग आदि से उत्पन्न ध्वनिरूप शब्द भी अनित्य ही होता है, क्योंकि उसकी उत्पत्ति भी है और विलय भी है। नित्य पदार्थ तो उत्पत्ति व विलय से रहित हुआ करते हैं। तो फिर वैयाकरण लोग किस प्रकार शब्द का नित्यत्व प्रतिपादित करते हैं यह जिज्ञासा बनी रहती है। जिज्ञासा के उपशमनार्थ वैयाकरणों के शब्द नित्यत्ववाद को जान लेना आवश्यक है। ध्वनिवर्णादि स्वरूप जो श्रूयमाण शब्द है उसकी नित्यता का प्रतिपादन वैयाकरणों के द्वारा नहीं किया जाता। वर्णादिरूप से सुनाई देने वाले शब्द की उत्पत्ति में भी अन्य एक शब्द कारणीभूत होता है। यह अर्थबोधजनक आन्तरिक चेतनाविशेषरूप शब्द है। यह वही मूलाधारस्थ चेतना है जो हमारे शरीर में शक्ति का संचार करती है जो कि योगियों के द्वारा सहजता से सक्षात् कर ली जाती है। वैयाकरण इस संचेतना को ही स्फोट अथवा शब्द ब्रह्म कहते हैं। वैयाकरणों के द्वारा कहा जाने वाला नित्य शब्द श्रोतृग्राह्य नहीं है। नित्य तो मूलाधारस्थ परावाक रूपी ब्रह्म ही है जो केवल अभ्यास के बल पर मन के द्वारा ग्राह्य है। जो कानों से ग्रहण करने वाला वैखरी रूप शब्द है उसकी तो अनित्यता ही वैयाकरणों के द्वारा प्रतिपादित की जाति है। सुनाई देने वाले शब्द की उत्पत्ति अन्तःस्थित एक विशेष चेतना से होती है। वह विशेष चेतना

शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका 17 सितम्बर 2018
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

उस नित्य व सर्वव्यापक परमात्मा का ही अंश है। इस प्रकार जब वह परमात्मा नित्य व सर्वव्यापक हुआ तो उसका अंश आन्तरिक चेतनारूप स्फोट (शब्द ब्रह्म) भी नित्य ही कहलाता है। अन्तःस्थित चेतनारूप आत्मा व परमात्मा का अभेद से नित्यत्व तो सर्वप्रसिद्ध है ही। तो इस प्रकार योगियों के द्वारा जो नित्य आन्तरिक स्फोट शब्दब्रह्म रूप है उसकी सामान्य व्याकरण के अध्येता के द्वारा अपने अन्तःकरण में किस प्रकार प्राप्ति की जाए ? उसके परिचय के लिए कौन-कौन से उपायों का आश्रय लिया जाए उनमें से कतिपय शास्त्रोक्त उपायों का उद्धरण यहां किया जा रहा है -

वेद के निदिध्यासन से शब्द ब्रह्म की प्राप्ति -

मन्त्र के द्रष्टा महर्षियों ने शब्द ब्रह्म की प्राप्ति का उपाय साक्षात् वेद कहा है। यह वेद अनेक शाखाओं से युक्त ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद और अथर्ववेद के रूप में हमारे पूर्वजों के द्वारा अभ्यस्त किया गया है। वेद सभी विद्याओं की उत्पत्ति का स्थान माना गया है। जीव के इहलोक में आगमन से लेकर परम पद की प्राप्ति तक सभी उपाय वेद में सन्निहित है। वेद की वर्णरूप राशि व चेतनारूप अदृष्टत्व दोनों ही शब्द ब्रह्म के परिचय में सहायक हैं। अतः यह वेद शब्द ब्रह्म की प्राप्ति में मुख्य उपायभूत है। इस विषय को भर्तृहरि जी ने इस प्रकार कहा है -

प्राप्त्युपायोऽनुकारश्च तस्य वेदो महर्षिभिः।
एकोऽप्यनेकवर्त्मेव समाम्नातः पृथक् पृथक्॥[4]

वेद के ज्ञान से अन्तःस्थित स्फोटरूप जो शब्द ब्रह्म है उसके साथ सायुज्य की प्राप्ति होती है। शब्द ब्रह्म ही परमात्मा का स्वरूप होता है। अन्तःस्थित चेतनारूप ब्रह्म ही श्रूयमाण स्थूल शब्द का उत्पादक है। यह स्थूल शब्द वेदवाणी के माध्यम से शब्द ब्रह्म (स्फोट) का परिचय करवाता है तथा उसके साथ साधक के तादात्म्यम् को बनाकर मोक्ष के मार्ग पर अग्रसर करता है। अतः वेद के माध्यम से शब्दाख्य सर्वव्यापक तत्व की प्राप्ति के द्वारा मोक्ष साध्य है। यह विषय भर्तृहरि जी के द्वारा इस प्रकार इंगित किया गया है -

अपि प्रयोक्तुरात्मानं शब्दमन्तर्वस्थितम्।
प्राहुर्महान्तं ऋषभं येन सायुज्यमश्नुते॥

महामहोपाध्याय नागेश जी कहते हैं कि - **'तत्र मूलाधारस्थपवनसंस्कारीभूता मूलाधारस्था <u>शब्दब्रह्मरूपा</u> स्पन्दशून्या बिन्दुरूपिणी परा वागुच्यते। नाभिपर्य्यन्तमागच्छता तेन वायुनाऽभिव्यक्ता मनोगोचरीभूता पश्यन्ती वागुच्यते। एतद्वयं <u>वाग्ब्रह्म</u> योगिनां समाधौ निर्विकल्पकसविकल्पकज्ञानविषय इत्युच्यते[5]'** इत्यादि। अर्थात् शब्द ब्रह्म रूप मूलाधारस्थित परा वाक है जो कि स्पन्द चेष्टादि से रहित है। उसकी प्रेरणा से नाभि देश तक उठने वाली वाक पश्यन्ती है। यह दोनों प्रकार की वाक (शब्द) योगियों के द्वारा साक्षात् की जाती है। अब यहां पर जो नागेश जी ने जिस परावाक को योगी के ही अनुभव के गोचरा होने वाली कहा है वही शब्द ब्रह्म का पर्याय है जिसकी प्राप्ति के लिए योगमार्ग का सहारा लिया जाना अत्यन्त आवश्यक है। यदि कोई साधक अपने आप को योगी बनाने का प्रयास करता है तो शब्द ब्रह्म की प्राप्ति अवश्य ही हो जाती है। यद्यपि योग का क्षेत्र संस्कृत वाङ्मय में अतिविशाल है। पुनरपि योग से जुड़ी हुई हरेक गतिविधि व प्रक्रिया ईश्वर की प्राप्ति में सहायक होती है फिर भी यहां संक्षेप में योग व योगदर्शनोक्त कुछ उपायों से नित्य शब्दाख्य ब्रह्म का साक्षात्कार किया जा सकता है। इस विषय में प्रतिपादित किया जा रहा है -

शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका 17 सितम्बर 2018
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

योगदर्शन में प्रणव-शब्द से शब्द ब्रह्म की प्राप्ति

शब्द ही ब्रह्म है ऐसा प्रतिपादित किया जा चुका है। अब इस शब्द ब्रह्म की अपनी चेतनारूप आत्मा में लौकिक ध्वनिरूप शब्द के द्वारा क्या हम अनुभूति कर सकते हैं या नहीं इस प्रकार की जिज्ञासा उत्पन्न होती है। इसके समाधान के लिए योगदर्शन के समाधिपाद में **'क्लेशकर्मविपाकाशयैरपरामृष्टः पुरुषविशेष यः ईश्वरः[6]', 'तस्य वाचकः प्रणवः[7]'** इत्यादि सूत्रों के माध्यम से उपदेश किया गया है। अर्थात् क्लेश कर्म, विपाक और आशय से जो अपरामृष्ट है वह पुरुषविशेष ईश्वर है और उसका वाचक प्रणव अर्थात् ओम् यह शब्द है। यहां ॐ वाच्य के रूप में जो कहा गया है वह ईश्वर है। वह ईश्वर अभेद सम्बन्ध से वैयाकरणों के मत में शब्द ब्रह्म ही है। प्रणव यह शब्द ओम् इस शब्द का ही दूसरा नाम है। यह प्रणव यदि वाचक है तो ईश्वर इसका वाच्य होता है। इन दोनों में वाच्यवाचकभाव सम्बन्ध है। अब यहां पर जिज्ञासा होती है कि ईश्वर और प्रणव का जो वाच्यवाचकभाव सम्बन्ध है वह कृत्रिम है अथवा दीपक के प्रकाश की तरह नित्य है ? इसके समाधान में ईश्वर और प्रणव का सम्बन्ध नित्य होता है यही प्रतिपादित किया जाता है। ईश्वर का संकेत तो सर्वदा नित्य संबन्ध को ही प्रकाशित करता है। जैसे कि - किसी पिता का उसके पुत्र के साथ संबन्ध अवस्थित होता है ठीक उसी प्रकार प्रणव का ईश्वर के साथ नित्य संबन्ध होता है। यदि ईश्वर पिता है तो प्रणव उसका पुत्रस्वरूप है और यही प्रणव उस ईश्वर के साथ संबन्ध का व्यवस्थापक व प्राप्त करवाने वाला होता है। यह विषय **'तस्य वाचकः प्रणवः'** इस योगदर्शन के सूत्र के व्यासभाष्य में स्पष्ट है, जैसे कि - **'वाच्य ईश्वरः प्रणवस्य। किमस्य सङ्केतकृतं वाच्यवाचकत्वम्, अथ प्रदीपप्रकाशवद् अवस्थितम् इति ? स्थितः अस्य वाच्यस्य वाचकेन सह सम्बन्धः। सङ्केतः तु ईश्वरस्य स्थितम् एव अर्थम् अभिनयति। यथा अवस्थितः पितापुत्रयोः सम्बन्धः सङ्केतेन अवद्योत्यते, अयमस्य पिता, अयमस्य पुत्र इति। सर्गान्तरेष्वपि वाच्यवाचकशक्त्यपेक्षः तथैव सङ्केतः क्रियते। सम्प्रतिपत्तिनित्यतया नित्यः शब्दार्थसम्बन्धः इत्यागमिनः प्रतिजानते।[8]'** इति।

अतः ईश्वर के पर्यायभूत शब्दब्रह्म की उपासना यदि करनी हो तो आवश्यक रूप से किसी साधक को प्रणवरूपी शब्दध्वनि का ध्यानपूर्वक जप करना चाहिए। प्रणव का जप करता हुआ साधक शब्दब्रह्म अर्थात् ईश्वर की भावना को अपने अन्तःकरण में उत्पन्न करे। अर्थात् ईश्वर के स्वरूप वा गुण धर्मों का चिन्तन करे।

साधक के इस कार्य के लिए भी महर्षि पतञ्जलि जी ने **'तज्जपस्तदर्थभावनम्[9]'** इत्यादि सूत्र निर्देश के द्वारा प्रणवरूपी शब्द के जप से शब्दब्रह्म की प्राप्ति का उपाय सूचित किया है ऐसा प्रतीत होता है। इस सूत्र के व्यास रचित भाष्य में भी इस बात की पुष्टि की गई है, जैसे कि - **'प्रणवस्य जपः प्रणवाभिधेयस्य** (प्रणवस्य वाच्यस्य) **चेश्वरस्य भावनम्। तदस्य योगिनः प्रणवं जपतः प्रणवार्थं च भावयतः चित्तम् एकाग्रं सम्पद्यते। तथा चोक्तम् - स्वाध्यायाद्योगमासीत योगात्स्वाध्यायमासते। स्वाध्याययोगसम्पत्त्या परमात्मा प्रकाशते॥'** अर्थात् शब्दचिन्तन से स्वाध्याय (आत्मचिन्तन) व स्वाध्याय से आत्मा में परमात्मा का प्रकाश होता है। यहां पर स्वाध्याय प्रणवरूप शब्द का जप ही व्याख्याताओं के द्वारा व्याख्यायित किया गया है। और श्लोक में पढ़े गए योग शब्द से समाधि का अर्थ ग्रहण किया गया है। अतः प्रणव

शब्द से परमात्मा की प्राप्ति होती है इस प्रकार महर्षि व्यास भी अपना समर्थन दे रहे हैं। इस विवरण से स्पष्ट होता है कि वैखरीरूप शब्द परमात्मा की प्राप्ति में सहायक होता है। परावाकब्रह्म रूप शब्द तो स्वयं परमात्मा ही है। वैयाकरणों की भाषा में उस ईश्वर को शब्द ब्रह्म कहा गया है यह विशेष है।

शब्दब्रह्म को आत्मसात् करने के लिए योगदर्शन में कहे गए कुछ और उपाय -

जैसा कि पहले प्रतिपादित किया जा चुका है कि योग का प्रत्येक विषय ईश्वर प्राप्ति में एक सहायक वस्तु है। इस दर्शन में अनेक उपाय साधक के लिए महर्षि द्वारा निर्दिष्ट हैं। उनमें से समाधि की प्राप्ति के लिए महर्षि पतंजलि जी के द्वारा अतीव सुव्यवस्थित अष्टांग योग का प्रतिपादन योगदर्शन में किया गया है। वहां पांच प्रकार के **अहिंसादि यम**[10] और पांच ही प्रकार के **शौचादि नियम**[11] साधक की मनोभूमि को निर्मल व एकाग्र बनाने के लिए बताए गए हैं। उसके बाद **आसन**[12] की स्थिति निर्दिष्ट की गई है। उसके बाद **प्राणायाम**[13] के द्वारा आन्तरिक और बाह्य शरीरशुद्धि पर बल दिया गया है। उसके बाद **प्रत्याहार**[14] के माध्यम से इन्द्रियों का अपने अपने विषयों से हटाये जाने का निर्देश दिया है। फिर किसी एक देशविशेष में चित्त को बांधे रखने के द्वारा **धारणा**[15] के स्वरूप को समझाया है। उसके बाद एकाग्रता से **ध्यान**[16] किस प्रकार करना है ऐसा उपदेश दिया है और सर्वान्त में शून्य के स्वरूप जैसी ईश्वर के साथ एकत्व को बिठाने वाली **समाधि**[17] की प्राप्ति के विषय में समझाया है। समाधि ईश्वर के साक्षात्कार की वह स्थिति है जिसे प्राप्त करके साधक अनिर्वचनीय अवस्था में निर्विकार हो जाता है। यहां साधक अपना परिचय प्राप्त करके अपने कारणस्वरूप ईश्वर का भी परिचय प्राप्त कर लेता है।

ध्यातव्य है कि इस क्रम तक पहुंचने के लिए महर्षि पतंजलि जी ने प्रणवरूप शब्द का सहारा योगदर्शन के पहले पादों में लिया है। अर्थात् स्थूल शब्द के माध्यम से ही सूक्ष्म शब्दब्रह्म यानि ईश्वर की प्राप्ति करवाई है। यही सभी योगदर्शनोक्त उपाय ईश्वर को शब्द ब्रह्म मानकर अथवा ईश्वर और शब्द ब्रह्म के बीच अभेद को अपने चित्त में उत्पन्न करके शब्दोपासक के द्वारा यदि धारण किए जाएं तो निश्चित रूप से मोक्षरूपिणी सिद्धि की प्राप्ति हो सकती है ऐसा मेरा चिन्तन है। और जो योगियों के द्वारा गम्य विशेष परावाक है, जो कि किसी सामान्य के द्वारा देखी नहीं जा सकती, जो शब्द ब्रह्म के रूप में शाब्दिकों के द्वारा संकीर्तित की जाती है उस ईश्वरस्वरूपिणी वाक का सन्दर्शन भी उपर्युक्त उपायों से हो सकता है। इस प्रकारके प्रयोग की साधकों के लिए आवश्यकता है।

निष्कर्ष

प्रस्तुत शोध पत्र की विषय वस्तु के अवलोकन से अधीतशास्त्र विद्वानों व सामान्य जनों का इस बात की ओर ध्यान अग्रेसर होगा कि पढ़े व पढ़ाए जाने वाले शब्द ब्रह्म को प्रायोगिक पक्ष में किस प्रकार से अन्तःकरण में अवस्थित किया जाए। व्याकरण के दर्शन में प्रायः छात्रसमुदाय में अरुचि लक्षित होती है। यदि योगादि क्रियात्मक विधाओं से छात्र समुदाय को शब्दब्रह्म के परिचय के लिए प्रेरित यदि किया जाए तो निश्चित रूप से इस विषय में छात्र समुदाय की अरुचि का परिहार किया जा सकता है। अध्यापक वर्ग भी क्रियात्मक पक्ष को अपनाकर आध्यात्मिक लाभ की प्राप्ति कर सकते हैं।

ईश्वर एक अनुभवगोचर विषय है। पञ्चतत्व के द्वारा निर्मित शरीर में उसका अंश विद्यमान है आत्मा के रूप में। यह चेतनारूप आत्मा ही शब्दब्रह्म के नाम से शाब्दिकों में व्यवहृत है। स्थूल ध्वनिवर्णादिरूप शब्द का कारण यह शब्दब्रह्म ही है। शब्दब्रह्म स्फोट नाम से भी पुकारा जाता है। शब्दब्रह्म के अध्ययन के साथ साथ यदि अन्तःकरण में इसकी संप्राप्ति हो जाए तो मानव जीवन की सभी समस्याओं का समाधान सुनिश्चित है क्योंकि अज्ञानवश परमतत्व के समीप में रहते हुए भी जीव उसे जान नहीं पाता। परन्तु वेदादि सच्छास्त्रों में तथा योगदर्शन में कहे गए प्रणवादि ईश्वर के वाचक तत्वों का आलम्बन यदि लिया जाय तो शब्दब्रह्म का वास्तविक परिचय का अनुभव किया जा सकता है।

सन्दर्भ ग्रन्थ

1 रंगाचार्य शास्त्री (व्याख्याता), काव्यादर्श:, (षष्ठ संस्करण) 1938, प्राच्यविद्या संशोधन मन्दिर, पुणे, पृष्ठ संख्या- 4, श्लोक संख्या - 4

2 रामनारायणदास, वाक्यपदीये ब्रह्मकाण्डस्य समीक्षा व्याख्या च, (प्रथम संस्करण) 2003, राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान, बलाहर (हि.प्र.), पृष्ठ संख्या- 45, श्लोक संख्या - 1

3 रामनारायणदास, वाक्यपदीये ब्रह्मकाण्डस्य समीक्षा व्याख्या च, (प्रथम संस्करण) 2003, राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान, बलाहर (हि.प्र.), पृष्ठ संख्या - 47, श्लोक संख्या - 5

4 रामनारायणदास, वाक्यपदीये ब्रह्मकाण्डस्य समीक्षा व्याख्या च, (प्रथम संस्करण) 2003, राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान, बलाहर (हि.प्र.), पृष्ठ संख्या- 100, श्लोक संख्या - 131

5 जयशंकरलाल त्रिपाठी (सम्पादकः), परमलघुमञ्जूषा, चौखम्बा कृष्णदास अकादमी, वारणसी (हि.प्र.), पृष्ठ संख्या - 71, स्फोटनिरूपणम्

6 सतीश आर्यः (व्याख्याता), पातञ्जल योगदर्शन, अमर स्वामी प्रकाशन, गाजियाबाद, समाधिपाद सू.सं. - 24 पृष्ठ संख्या- 131

7 सतीश आर्यः (व्याख्याता), पातञ्जल योगदर्शन, अमर स्वामी प्रकाशन, गाजियाबाद, समाधिपाद सू.सं. - 27 पृष्ठ संख्या-152

8 सतीश आर्यः (व्याख्याता), पातञ्जल योगदर्शन, अमर स्वामी प्रकाशन, गाजियाबाद, समाधिपाद व्यासभाष्य सू.सं. - 27 पृष्ठ संख्या- 152

9 सतीश आर्यः (व्याख्याता), पातञ्जल योगदर्शन, अमर स्वामी प्रकाशन, गाजियाबाद, समाधिपाद सू.सं. - 28 पृष्ठ संख्या- 156

10 सतीश आर्यः (व्याख्याता), पातञ्जल योगदर्शन, अमर स्वामी प्रकाशन, गाजियाबाद, साधनपाद सू.सं. - 30 पृष्ठ संख्या- 374

11 सतीश आर्यः (व्याख्याता), पातञ्जल योगदर्शन, अमर स्वामी प्रकाशन, गाजियाबाद, साधनपाद सू.सं. - 32 पृष्ठ संख्या- 385

12 सतीश आर्यः (व्याख्याता), पातञ्जल योगदर्शन, अमर स्वामी प्रकाशन, गाजियाबाद, साधनपाद सू.सं. - 46 पृष्ठ संख्या- 425

13 सतीश आर्यः (व्याख्याता), पातञ्जल योगदर्शन, अमर स्वामी प्रकाशन, गाजियाबाद, साधनपाद सू.सं. - 49 पृष्ठ संख्या- 431

14 सतीश आर्यः (व्याख्याता), पातञ्जल योगदर्शन, अमर स्वामी प्रकाशन, गाजियाबाद, साधनपाद सू.सं. - 54 पृष्ठ संख्या- 444

15 सतीश आर्यः (व्याख्याता), पातञ्जल योगदर्शन, अमर स्वामी प्रकाशन, गाजियाबाद, विभूतिपाद सू.सं. - 1 पृष्ठ संख्या- 459

16 सतीश आर्यः (व्याख्याता), पातञ्जल योगदर्शन, अमर स्वामी प्रकाशन, गाजियाबाद, साधनपाद सू.सं. - 2 पृष्ठ संख्या- 465

17 सतीश आर्यः (व्याख्याता), पातञ्जल योगदर्शन, अमर स्वामी प्रकाशन, गाजियाबाद, साधनपाद सू.सं. - 3 पृष्ठ संख्या- 468